इस्लाम के बारे में प्रचलित प्रश्नों के विश्वकोश से चुने हुए कुछ प्रश्न

(खंड : इस्लाम)

प्रश्न संख्या : 19

इस्लाम का क्या अर्थ है?

उत्तर :

महत्व / 1

प्रश्न : इस्लाम का क्या अर्थ है?

उत्तर : इस्लाम का साधारण अर्थ है, अल्लाह के प्रति समर्पण, उसके आगे झुकना और केवल उसी के कहे पर चलना। ज़ाहिरी तौर भी और बातिनी तौर भी। साथ ही उसके रसूलों द्वारा दी गई शिक्षाओं का पालन करना अर्थात उनके द्वारा प्राप्त अल्लाह के आदेशों का पालन करना और उसकी मना की हुई चीज़ों से दूर रहना। यही इस्लाम का साधारण अर्थ है।

इस्लाम तमाम नबियों का धर्म है, यद्यपि नबियों के शरई विधि-विधानों में थोड़ा-बहुत अंतर रहा हो। सारांश यह कि इस्लाम एकमात्र अल्लाह के प्रति समर्पण का नाम है। जिसने अल्लाह के साथ दूसरे के प्रति भी समर्पण रखा वह मुशरिक है, और जिसने अल्लाह के प्रति समर्पण नहीं रखा, वह अभिमानी है।

उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :﴿إِنَّ ٱلدِّينَ عِندَ ٱللَّهِ ٱلۡإِسۡلَٰمُۗ﴾ "निःसंदेह दीन (धर्म) अल्लाह के निकट इस्लाम ही है।"[सूरा आल-ए-इमरान: 19]

तथा उच्च एवं महान अल्लाह ने फ़रमाया :﴿وَمَن يَبۡتَغِ غَيۡرَ ٱلۡإِسۡلَٰمِ دِينٗا فَلَن يُقۡبَلَ مِنۡهُ وَهُوَ فِي ٱلۡأٓخِرَةِ مِنَ ٱلۡخَٰسِرِينَ﴾ "और जो इस्लाम के अतिरिक्त कोई और धर्म तलाश करे, तो वह उससे हरगिज़ स्वीकार नहीं किया जाएगा और वह आख़िरत में घाटा उठाने वालों में से होगा।"[सूरा आल-ए-इमरान: 85]

एक सहीह हदीस में है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है :"सारे नबी ऐसे भाइयों (की तरह) हैं, जिनके पिता एक और माताएँ अलग-अलग हों। और उनका दीन एक है।"

हदीस में आया हुआ शब्द "العلات" बहुवचन है "عَلَّة" का, जिसका अर्थ है, सौकन। अरबी में "بنو العلات" ऐसे भाइयों के कहते हैं, जिनके पिता एक और माताएँ अलग-अलग हों। इस हदीस का मतलब यह है कि सारे नबियों का दीन एक है, यद्यपि उनकी शरीयतों में कुछ अंतर रहा हो।

इस्लाम शब्द अपने विशिष्ट मायने में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबी बनाए जाने के बाद के दौर के लिए प्रयोग में आता है। वह उस दीन के साथ खास है, जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लेकर आए। क्योंकि आपके दीन ने पिछले तमाम नबियों के दीनों को निरस्त कर दिया है। इसलिए अब आपका अनुसरण करने वाला मुसलमान है और आपका विरोध करने वाला मुसलमान नहीं है।चुनांचे सारे रसूलों के अनुसरणकारी अपने-अपने रसूलों के ज़माने में मुसलमान थे। यहूदी मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में मुसलमान थे और ईसाई ईसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में मुसलमान थे।लेकिन जब अंतिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नबी बनाकर भेज दिया गया और उन लोगों ने आपको मानने से इनकार कर दिया, तो फिर मुसलमान नहीं रहे।

अल्लाह हर समुदाय को उसकी परिस्थिति एवं समय के अनुरूप विधान प्रदान करता है, जो उसे सही रास्ते पर चलाने और उसके हितों की रक्षा के लिए काफ़ी होता है। फिर उसका समय समाप्त हो जाने के बाद उसके जिस भाग को चाहता है निरस्त कर देता है। यह सिलसिला चलता ही रहा, यहाँ तक कि इस धरा पर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सारे लोगों और क़यामत तक के लिए अपना अंतिम नबी बनाकर भेजा।और आपको एक ऐसी व्यापक तथा विशाल शरीयत प्रदान की, जो हर युग और हर स्थान के लिए अनुकूल है। उसमें न कोई बदलाव होना है और न उसे निरस्त किया जाना है। इसलिए धरती पर बसने वाले सारे इन्सानों के लिए उसका अनुसरण करने और उसपर ईमान लाने के अतिरिक्त और कोई

रास्ता नहीं है।﴿قُلْ يَـٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِنِّى رَسُولُ ٱللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا﴾ "(ऐ नबी!) आप कह दें कि ऐ मानव जाति के लोगो! निःसंदेह मैं तुम सब की ओर अल्लाह का रसूल हूँ।"[सूरा अल-आराफ़ : 158]

उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :﴿وَمَآ أَرْسَلْنَـٰكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَـٰلَمِينَ﴾ "और (ऐ नबी!) हमने आपको समस्त संसार के लिए दया बनाकर भेजा है।"[सूरा अल-अंबिया : 107]

अल्लाह ने इस्लाम के साथ ही अपने दीन को संपूर्ण कर दिया और अपनी नेमत पूरी कर दी।

उसने दीन-ए-इस्लाम को एक संपूर्ण तथा जीवन के सभी क्षेत्रों को सम्मिलित दीन बनाया, जो ईश्वर के अधिकारों की रक्षा करने, उनका पालन करने और उनको अदा करने तथा बंदों के अधिकार और इनके प्रति प्रतिबद्धता एवं हमारे आस-पास मौजूद सारी सृष्टियों के अधिकार को शामिल है। और जो हर मुसलमान पर यह अनिवार्य करता है कि वह हर अधिकार वाले को उसका अधिकार दे।

उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :﴿ٱلْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِى وَرَضِيتُ لَكُمُ ٱلْإِسْلَـٰمَ﴾ "आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म परिपूर्ण कर दिया, तथा तुमपर अपनी नेमत पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को धर्म के रूप में पसंद कर लिया।"[सूरा अल-माइदा : 3]

इस्लाम एक ऐसा धर्म है, जो विज्ञान, तर्क एवं प्रकृति के अनुकूल है और कहीं भी सही व्यवहारिक एवं प्रायोगिक विज्ञान से टकराता नहीं है।

इस्लाम में दाख़िल होने के लिए ज़बान से दोनों गवाहियों के इन शब्दों का उच्चारण करना ज़रूरी है : मैं इस बात की गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं। साथ ही इन शब्दों के अर्थ को जानना, इनपर अकाट्य विश्वास रखना और इनके तक़ाज़ों (मांग) पर अमल करना भी ज़रूरी है।इस्लाम में दाख़िल होने के लिए अल्लाह, उसके फ़रिश्तों, उसकी किताबों, उसके रसूलों, आख़िरत के दिन और तक़दीर पर विश्वास करना ज़रूरी है। फिर, इसके बाद नमाज़ क़ायम करना, ज़कात देना, रमज़ान महीने के रोज़े रखना और सामर्थ्य होने पर अल्लाह के पाक घर काबा का हज करना अनिवार्य है।साथ ही अल्लाह के सभी आदेशों का पालन करते हुए और उसकी मना की हुई चीज़ों से बचते हुए जीवन बिताना भी ज़रूरी है।अल्लाह की कृपा एवं शान्ति हो हमारे संदेष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके परिजनों तथा साथियों पर।एकीकृत संख्या : 220

प्रश्न संख्या : 29

क्या इस्लाम वर्गीकरण की अवधारणा की समर्थन करता है?

उत्तर :

महत्व / 1

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है (कि इस्लाम में वर्गीकरण नहीं है), लोगों को धन या वंश या कार्य के आधार पर विभिन्न वर्गों में इस तरह बाँट देने का कि इन्सान अपने वर्ग को बदल न सके। इस्लाम वर्गीकरण को अज्ञानता काल (जाहिलीयत) की बची हुई ग़लत चीज़ों में से एक चीज़ समझता है।इस्लाम इस बात से मना करता है कि मुसलमानों के अंदर वर्गीकरण जैसी कोई चीज़ पैदा हो। क्योंकि अल्लाह ने लोगों को एक नर एवं एक नारी से इसलिए पैदा किया है, ताकि उनका परिचय हो सके, इसलिए नहीं कि लोग एक-दूसरे पर चढ़ बैठें। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :{ يَاأَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِنْ ذَكَرٍ وَأُنْثَى وَجَعَلْنَاكُمْ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ أَتْقَاكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ} "ऐ मनुष्यो! हमने तुम्हें एक नर और एक मादा से पैदा किया तथा हमने तुम्हें जातियों और क़बीलों में कर दिया, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो। निःसंदेह अल्लाह के निकट तुममें सबसे अधिक सम्मान वाला वह है, जो तुममें सबसे अधिक तक़्वा (धर्मपरायणता) वाला है। निःसंदेह अल्लाह सब कुछ जानने वाला, पूरी ख़बर रखने वाला है।"[सूरा अल-हुजुरात : 13]अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बताया है कि केवल नसब (वंश) इन्सान को आगे नहीं बढ़ा सकता। उसे आगे उसका अमल और लोगों के हित में किए गए काम बढ़ाते हैं। आपने कहा है :"जिसका कर्म उसे पीछे कर दे, उसका कुल उसे आगे ले नहीं जा सकता।"[सहीह मुस्लिम : 38]

जहाँ तक लोगों के बीच धन एवं स्थान आदि में असमानता पाए जाने की बात है, तो यह अपने आपमें न तो प्रशंसा की बात है और न निंदा की। प्रशंसा की बात उस समय होगी, जब इन्सान अल्लाह के दिए हुए धन एवं पद आदि को अल्लाह के आज्ञापालन एवं लोगों की सेवा में लगाए और निंदा की बात उस समय होगी, जब वह इसके कारण अपने रब की अवज्ञा पर उतर आए एवं लोगों पर घमण्ड तथा अत्याचार करे। अगर ऐसा न हो, तो लोगों के बीच में पाई जाने वाली यह असमानता

एक सांसारिक परंपरा है, जो अल्लाह की ओर से धरती को आबाद रखने के लिए क़ायम की गई है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :{ أَهُمْ يَقْسِمُونَ رَحْمَتَ رَبِّكَ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَعِيشَتَهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا سُخْرِيًّا وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِمَّا يَجْمَعُونَ)32("क्या वे आपके रब की दया को बाँटते हैं? हमने ही दुनिया के जीवन में उनके बीच उनकी रोज़ी को बाँटा है तथा उनमें से कुछ को दूसरों से श्रेणियों की दृष्टि से उच्च रखा है, ताकि उनमें से कुछ दूसरों को (अपने) अधीन बना लें, तथा आपके रब की दया उससे उत्तम है, जिसे वे इकट्ठा करते हैं। وَلَوْلَا أَنْ يَكُونَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً لَجَعَلْنَا لِمَنْ يَكْفُرُ بِالرَّحْمَنِ لِبُيُوتِهِمْ سُقُفًا مِنْ فِضَّةٍ وَمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُونَ)33(और यदि ऐसा न होता कि सब लोग एक ही समुदाय हो जाएँगे, तो निश्चय हम उन लोगों के लिए जो रहमान के साथ कुफ़्र करते हैं, उनके घरों की छतें चाँदी की बना देते और सीढ़ियाँ भी, जिनपर वे चढ़ते हैं।)34(وَلِبُيُوتِهِمْ أَبْوَابًا وَسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَّكِئُونَ तथा उनके घरों के द्वार और तख़्त भी, जिनपर वे टेक लगाते हैं।)35({وَزُخْرُفًا وَإِنْ كُلُّ ذَلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِينَ और सोने के (बना देते)। यह सब तो मात्र सांसारिक जीवन का सामान है तथा आख़िरत आपके रब के यहाँ केवल परहेज़गारों के लिए है।"[सूरा अल-ज़ुख़रुफ़ : 32-35]अल्लाह ने बताया है कि सांसारिक चीज़ों में लोगों के बीच पाई जाने वाली यह असमानता अल्लाह की तदबीर का हिस्सा है। शैख़ अब्दुर रहमान अल-सादी कहते हैं :"अल्लाह तआला बता रहा है कि दुनिया उसके यहाँ किसी भी चीज़ के बराबर नहीं है। अगर बंदों पर अल्लाह की दया एवं कृपा न होती, जिसपर वह किसी चीज़ को आगे नहीं रखता, तो काफ़िरों को अत्यधिक प्रचुर मात्रा में दुनिया प्रदान कर देता और उनके घरों की छतें तथा सीढ़ियाँ चाँदी की बना देता। यानी उनकी दुनिया को खूब चमकदार बना देता और उनकी हर इच्छा पूरी कर देता। लेकिन अपने बंदों पर उसकी दया ने उसे ऐसा करने से रोक दिया कि कहीं संसार प्रेम के कारण लोग अल्लाह के प्रति अविश्वास एवं गुनाहों में न पड़ जाएँ। इससे पता चलता है कि अल्लाह कुछ चीज़ों से बंदों को सामान्य या विशेष रूप से उनके हितों को देखते हुए रोकता है और दुनिया का महत्व अल्लाह के निकट मच्छर के पर के बराबर भी नहीं है। साथ ही यह कि इस आयत में उल्लिखित सारी चीज़ें दुनिया के क्षणिक आनंद की चीज़ें हैं, जो दरअसल जीवन को विचलित करने वाली और नश्वर हैं। जबकि अल्लाह के निकट आख़िरत उन लोगों के लिए बेहतर है, जो अपने रब से डरते हुए उसके आदेशों का पालन करते हैं और उसकी मना की हुई चीज़ों से दूर रहते हैं। क्योंकि जन्नत की नेमतें हर दृष्टि से संपूर्ण हैं और जन्नत के अंदर वह सारी चीज़ें मौजूद हैं, जिनकी आकांक्षा दिल में जागे और जो आँखों को भाएँ और उसके अंदर जन्नती सदा रहेंगे। अब ज़रा बताएँ कि दोनों स्थानों के बीच कितना बड़ा अंतर है!"सादी की तफ़सीर तैसीर अल-करीम अल-रहमान, पृष्ठ : 765

इस्लाम लोगों के अमीर एवं ग़रीब में विभाजन को रद्द करने का प्रयास नहीं करता कि जैसे सब को अमीर या सब को ग़रीब बनाने दे। बल्कि उसने अमीर को ग़रीब का ख़्याल रखने का आदेश दिया है। जहाँ तक लोगों के बीच पाए जाने वाले सामान्य प्राकृतिक अंतरों से लड़ने और उन्हें दूर करने की कोशिश करने की बात है, तो यह सांसारिक आम नियमों का उल्लंघन है। इसीलिए इस्लाम उनसे सही ढंग से निपटने के लिए आया है।दरूद व सलाम हो हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर।

एकीकृत संख्या : 2470

प्रश्न संख्या : 30

इस्लाम में संतुलन (एतिदाल अर्थाथ अतिशयोक्ति) की अवधारणा क्या है?

उत्तर :

महत्व / 1

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, इस्लाम की नज़र में संतुलन (एतिदाल) का मतलब है, दो गुमराहियों यानी अतिशयोक्ति एवं कुव्यवहार के बीच संतुलन।इस्लाम एक मध्य मार्ग है यहूदियों की इस कोताही एवं बेशर्मी की जिस में उन्होंने अल्लाह को निर्धन और खुद को धनवान् बता डाला और कुछ नबियों को झुठलाया तथा कुछ का वध कर डाला और ईसाइयों की इस अतिशयोक्ति के बीच कि उन्होंने ईसा अलैहिस्सलाम को पूज्य एवं अपने विद्वानों तथा धर्म-गुरुओं को अल्लाह के स्थान पर रब बना डाला।

इस्लाम में संतुलन (एतिदाल)की अवधारणा बड़ी व्यापक है। अधिकारों में संतुलन यह है कि हर अधिकार वाले को उसका अधिकार दिया जाए, चाहे वह अलग धर्म का मानने वाला तथा तुम्हारा विरोधी ही क्यों न हो। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :{ يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوَّامِينَ لِلَّهِ شُهَدَاءَ بِالْقِسْطِ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَآنُ قَوْمٍ عَلَى أَلَّا تَعْدِلُوا اعْدِلُوا هُوَ أَقْرَبُ لِلتَّقْوَى وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ)8("ऐ ईमान वालो! अल्लाह के लिए मज़बूती से क़ायम रहने वाले, न्याय के साथ गवाही देने वाले बन जाओ। तथा किसी समूह की शत्रुता तुम्हें इस बात पर कदापि न उभारे कि तुम न्याय न करो। न्याय करो, यह तक़्वा

(अल्लाह से डरने) के अधिक निकट है, और अल्लाह से डरो। निःसंदेह अल्लाह उससे भली-भाँति अवगत है जो तुम करते हो।"[सूरा अल-माइदा : 8]यहाँ मामला न तो यहूदियों के जैसा है, जो कहते हैं कि इन अनपढ़ों के बारे में हमारी कोई पकड़ नहीं होगी। और न ईसाइयों के जैसा है, जो कहते हैं कि जो तुम्हारे दाएँ गाल पर थप्पड़ मारे, उसे बायाँ गाल भी प्रस्तुत कर दो। यद्यपि ईसाई इसका पालन नहीं करते, बल्कि लोगों को थप्पड़ मारते और लूट-मार मचाते हैं।

इसी तरह संतुलन (एतिदाल) मध्य मार्ग एवं न्याय का नाम है। इस्लाम हर क्षेत्र में दो बुराइयों के बीच की अच्छाई है। और मुसलमान से कहा गया है कि वह संतुलित रहे। न अतिशयोक्ति का शिकार हो और न सुस्ती में पड़े। वह अपनी आत्मा, अपने कर्तव्यों तथा अधिकारों के बारे में संतुलन बनाए रखे और इसे अपने कार्यों तथा कथनों में झलकने दे।इस संदर्भ के कुछ क्षेत्र इस प्रकार हैं : 1- इस्लाम ने जहाँ एक ओर इबादतों एवं आत्म शुद्धि आदि के द्वारा आत्मा की ज़रूरत का ख़्याल रखा है, वहीं दूसरी ओर जीवन के सारे कार्यों तथा खाने-पीने को व्यवस्थित करके, निकाह की प्रेरणा देकर और वैवाहिक जीवन से दूर होकर खुद को इबादत में लीन कर लेने से मना करके शरीर की ज़रूरत का भी ख़्याल रखा है।जबकि हम कुछ लोगों को देखते हैं कि उनका पूरा ध्यान आत्मा पर रहता है और शरीर पर कुछ भी ध्यान नहीं देते। जबकि शरीर द्वारा ही इबादतें की जाती हैं। इस प्रकार के लोग स्नान तथा साफ़-सफ़ाई करना छोड़ देते हैं, मोटे कपड़े पहनते हैं, अनुपयुक्त खाना खाते हैं, इबादत में अतिशयोक्ति से काम लेते हैं, लोगों से अलग-थलग रहते हैं और प्रकृति विरुद्ध कार्य करते हैं। मसलन ईसाई पुरोहित, कुछ बौद्ध एवं हिंदु और अतिशयोक्ति में पड़े हुए सूफ़ी।जबकि इसके विपरीत कुछ लोगों का सारा ध्यान शरीर पर रहता है और आत्मा पर बिल्कुल ध्यान नहीं देते। इस प्रकार के लोग केवल अपनी इच्छाओं एवं आकांक्षाओं के लिए जीते हैं। ये न किसी धार्मिक विधान को मानते हैं और न इबादत पर ध्यान देते हैं।

2- इस्लाम ग़ैर-मुस्लिमों के साथ खरीदने-बेचने और उनको भेंट देने एवं लेने आदि की अनुमति देता है, उनके साथ न्यायपूर्ण व्यवहार करने और युद्ध की परिस्थिति को छोड़कर अन्य हालतों में उनको कष्ट देने से बचने का आदेश देता है। यह और बात है कि उनके अक़ीदे तथा आचार-विचार से प्रभावित न होने की भी ताकीद करता है।जबकि कुछ लोग अलग धर्म रखने वाले हर व्यक्ति का वध कर देते हैं और लोगों पर अत्याचार केवल इसलिए करते हैं कि वे उनके धर्म या उनके पंथ के नहीं हैं। इसके विपरीत कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो ग़ैर-मुस्लिमों को खुश करने के लिए अपने धर्म का परित्याग कर देते हैं और चापलूसी तथा लालच का शिकार होकर उनकी हर बात मानने के लिए तैयार रहते हैं। उनको इस बात का आभास नहीं होता कि इससे उनका अपमान होता है और दुनिया एवं दीन दोनों हाथ से निकल जाते हैं।

3- इस्लाम अल्लाह, उसके गुणों और उसके कार्यों पर बिना कोई उदाहरण दिए ईमान रखने की शिक्षा देता है। जबकि कुछ ज़बान से अल्लाह के अस्तित्व का इनकार करते हैं, चाहे उनका दिल उनकी ज़बान से विपरीत ही क्यों न कहता हो।इन्हीं में से कुछ लोग अल्लाह को न होने की तरह समझते हैं और उसके किसी गुण या किसी कार्य को नहीं मानते। ये तथा इस प्रकार के अन्य लोग अल्लाह को गुणरहित मानने में एक जैसे हैं।जबकि दूसरे छोर पर कुछ लोग समझते हैं कि हर चीज़ अल्लाह है। कुछ लोग तो फ़रिश्तों एवं ईसा अलैहिस्सलाम या फिर इनसे भी कमतर सृष्टियों, जैसे बुतों और पेड़-पौधों आदि को भी पूज्य बना लेते हैं और उनमें से कुछ को अल्लाह के नामों से निकाले गए नाम दे देते हैं। ये तथा इस प्रकार के अन्य लोग अन्य चीज़ों को अल्लाह के जैसा सिद्ध करने में एक जैसे हैं।

4- इस्लाम ने तक़दीर (भाग्य) को सिद्ध किया है। उसने बताया है कि इस दुनिया में होने वाले हर काम अल्लाह के इरादे से होता है। इस दनिया में अल्लाह के आदेश के अनुसार जो भी काम होता है, अल्लाह उसे पसंद करता है। बंदे का भी इरादा होता है और उसके इरादे से किए हुए काम अल्लाह के इरादे से बाहर नहीं होते।जबकि कुछ लोगों का कहना है कि बंदा जो भी करता है, उसमें उसका कोई इरादा नहीं होता। वह उसे करने पर विवश होता है। जबकि इसके विपरीत कुछ लोग यह भी कहते हैं कि बंदा खुद अपने कृत्य का रचनाकार होता है और इसमें अल्लाह के इरादे का कोई दख़ल नहीं होता।

5- इस्लाम अर्थव्यवस्था के मामले में भी साम्यवाद एवं पूंजीवाद के बीच मध्यम मार्ग दिखाता है।

6- इस्लाम ने सभी विषयों में न्यायपूर्ण एवं मध्यम मार्गी शिक्षा दी है। अल्लाह के साथ संबंध के विषय में, लोगों के साथ संबंध के विषय में भी और मनुष्य के खुद अपने साथ संबंध के विषय में भी।आप कभी-कभी अन्य धर्मों को भी इनमें से कुछ पक्षों का ध्यान रखते हुए पाएंगे, लेकिन (इस्लाम की तरह) व्यापक रूप से नहीं। क्योंकि इस्लाम अल्लाह का वह दीन है, जिसे अल्लाह ने पसंद किया है, अंतिम दीन बनाया है और उसे हर युग, हर स्थान एवं हर इन्सान के लिए उपयुक्त बनाया है। मानव विवेक इसके रहस्यों को जानने से विवश है। अल्लाह इसके अतिरिक्त किसी दीन को ग्रहण नहीं करता। दरूद व सलाम हो हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर।

एकीकृत संख्या : 2140

प्रश्न संख्या : 31

इस्लाम में सहिष्णुता के क्या-क्या रूप हैं?

उत्तर :

महत्व / 1

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, इस्लाम ने सहिष्णुता की जो अवधारणा प्रस्तुत की है, वह मानव इतिहास में सहिष्णुता की सबसे संपूर्ण तथा सबसे विकसित अवधारणा है। शरीयत में इसका एक रूप आसानी की शक्ल में भी देखने को मिलता है। आसानी इस्लाम में बहुत-से स्थानों में देखने को मिलती है। जैसे :

अल्लाह ने इस्लामी शरीयत के अंदर इबादतों को आसान कर दिया है। इस्लामी शरीयत बोझ और अनुचित बंधन वाली शरीयत नहीं है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :{ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ الْأُمِّيَّ الَّذِي يَجِدُونَهُ مَكْتُوبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنْجِيلِ يَأْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَاهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبَائِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَالْأَغْلَالَ الَّتِي كَانَتْ عَلَيْهِمْ} "जो लोग उस रसूल का अनुसरण करते हैं, जो उम्मी नबी है, जिसे वे अपने पास तौरात तथा इंजील में लिखा हुआ पाते हैं, जो उन्हें नेकी का आदेश देता है और बुराई से रोकता है, तथा उनके लिए पाकीज़ा चीज़ों को हलाल (वैध) करता और उनपर अपवित्र चीज़ों को हराम (अवैध) ठहराता है और उतारता है उनसे उनका बोझ और उनके बंधनों को जिनमें वह जकडे हुए थे।"[सूरा अल-आराफ़ : 157]उदाहरण-स्वरूप पिछली शरीयतों में इन्सान इबादत केवल इबादत के स्थानों में ही कर सकता था। जबकि इस शरीयत ने इस बात की अनुमति दी है कि जहाँ भी नमाज़ का समय हो जाए, इन्सान वहीं नमाज़ पढ़ सकता है। चाहे अंतरिक्ष में हो, समुद्र में हो या धरती में।इसी तरह पिछली शरीयतों में नापाकी दूर करने के लिए पानी ज़रूरी था, लेकिन इस शरीयत में तयम्मुम का विकल्प रखा गया है। यही हाल यात्रा तथा बीमारी की अवस्था में चार रकात वाली नमाज़ों को आधा पढ़ने तथा रमज़ान महीने में रोज़ा न रखने की अनुमति का भी है।

इस्लाम के आसान धर्म होने का एक नमूना यह है कि उसने गुनाह करने वाले को तौबा करने का विकल्प दिया है, जबकि बनी इसराईल में तौबा क़बूल होने के लिए ज़रूरी था कि लोग एक-दूसरे का वध कर दें। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :{ وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ يَاقَوْمِ إِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ أَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوبُوا إِلَى بَارِئِكُمْ فَاقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ عِنْدَ بَارِئِكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ} "तथा (वह समय याद करो) जब मूसा ने अपनी कौम से कहा : ऐ मेरी कौम के लोगो! निःसंदेह तुमने बछड़े को पूज्य बनाकर अपने आपपर अत्याचार किया है। अतः तुम अपने पैदा करने वाले के समक्ष तौबा करो और आपस में एक-दूसरे को क़त्ल करो। यही तुम्हारे लिए तुम्हारे पैदा करने वाले के निकट उत्तम है। फिर उसने तुम्हारी तौबा क़बूल कर ली। निःसंदेह वही बहुत तौबा क़बूल करने वाला, अत्यंत दयावान् है।"[सूरा अल-बक़रा : 54]जहाँ तक इस्लाम की बात है, तो उसके अनुसार जब इन्सान तौबा करता है, तो अल्लाह उसकी तौबा क़बूल करता है और उसके गुनाहों को नेकियों में बदल देता है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :{ وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ يَلْقَ أَثَامًا)68(يُضَاعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَيَخْلُدْ فِيهِ مُهَانًا)69(إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَأُولَئِكَ يُبَدِّلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا)70(وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهُ يَتُوبُ إِلَى اللَّهِ مَتَابًا)71(} "और जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे पूज्य को नहीं पुकारते, और न उस प्राण को क़त्ल करते हैं, जिसे अल्लाह ने हराम ठहराया है परंतु हक़ के साथ और न व्यभिचार करते हैं। और जो ऐसा करेगा, वह पाप का भागी बनेगा।)69(क़यामत के दिन उसकी यातना दुगनी कर दी जाएगी और वह अपमानित होकर उसमें हमेशा रहेगा।)70(परंतु जिसने तौबा कर लिया और ईमान ले आया और अच्छे काम किए, तो ये लोग हैं जिनके बुरे कामों को अल्लाह नेकियों में बदल देगा और अल्लाह हमेशा बहुत क्षमा करने वाला, अत्यंत दयावान् है।)71(और जो तौबा कर ले और नेक काम करे, तो निश्चय ही वह अल्लाह की ओर सच्चे तौर पर पलटता है।"[सूरा अल-फ़ुरक़ान : 68-71]आसानी का एक रूप अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इस हदीस में देखा जा सकता है :"जिसने इस्लाम की हालत में अच्छे काम किए, उसे अज्ञानता काल (जाहिलीयत) के गुनाहों का जवाबदेह होना नहीं पड़ेगा। लेकिन जो मुसलमान होने के बाद इस्लाम से फिर गया, उसे पहले और बाद के गुनाहों का जवाबदेह होने पड़ेगा।।"[सहीह बुख़ारी : 6921, सहीह मुस्लिम : 120]इस हदीस में आये हुए शब्द "أساء في الإسلام" से मुराद दोबारा गुनाह करना नहीं, बल्कि इस्लाम से फिर जाना है। अगर इन्सान मुसलमान होने के बाद इस्लाम से फिर जाए, तो उसके पहले और बाद में किए हुए दोनों प्रकार के गुनाहों की पकड़ होगी। लेकिन अगर इस्लाम से फिरता नहीं, बल्कि दोबारा गुनाह करता है, तो केवल इसी गुनाह पर उसकी पकड़ होगी, मुसलमान होने से पहले किए हुए गुनाहों पर नहीं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है :"क्या तुम नहीं जानते कि इसलाम पहले के गुनाहों को ख़त्म कर देता है?"[सहीह मुस्लिम : 121]

इस्लाम की आसानी का एक रूप यह है कि यह एक आसान धर्म है। इसमें बोझ और कठिन बंधन नहीं हैं। यही कारण है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है:"धर्म आसान एवं सरल है और धर्म के मामले में जो भी उग्रता दिखाएगा, वह परास्त होगा। अतः, बीच का रास्ता अपनाओ, अच्छा करने की चेष्टा करो, नेकी की आशा रखो तथा प्रातः एवं शाम और रात के अंधेरे में इबादत करके सहायता प्राप्त करो।"[सहीह बुख़ारी : 39]अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम ने जब मुआज़ बिन जबल और अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अनहुमा को यमन भेजा, तो दोनों से कहा :"लोगों के लिए आसानियाँ पैदा करो तथा उनको कठिनाई में न डालो, लोगों को सुसमाचार सुनाओ तथा उनको नफ़रत न दिलाओ और आपस में सामंजस्य बनाए रखो तथा मतभेद न करो।"[सहीह बुख़ारी : 3038, सहीह मुस्लिम : 7]

इस्लाम की आसानी तथा सहिष्णुता का एक उदाहरण यह है कि उसने माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करने का आदेश दिया है, चाहे दोनों ग़ैर-मुस्लिम ही क्यों न हों और चाहे दोनों उसे इस्लाम से दूर हटाने का प्रयास ही क्यों न करते हों।{ وَإِنْ جَاهَدَاكَ عَلَى أَنْ تُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوفًا وَاتَّبِعْ سَبِيلَ مَنْ أَنَابَ إِلَيَّ ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ)15} "और यदि वे दोनों तुझपर दबाव डालें कि तू मेरे साथ उस चीज़ को साझी ठहराए, जिसका तुझे कोई ज्ञान नहीं, तो उन दोनों की बात मत मान और दुनिया में उनके साथ सुचारु रूप से रह, तथा उसके मार्ग पर चल, जो मेरी ओर पलटता है। फिर मेरी ही ओर तुम्हें लौटकर आना है, तो मैं तुम्हें बताऊंगा जो कुछ तुम किया करते थे।"[सूरा लुक़मान : 15]जब असमा बिंत अबू बक्र सिद्दीक़ की माता उनसे मिलने के लिए आईं, तो उन्होंने अपनी माता के रिश्ते का हक़ अदा करने के लिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अनुमति माँगी। वह पूरी घटना बयान करते हुए कहती हैं : मेरी माँ, जो कि मुश्रिक थीं, सुलह हुदैबिया और मक्का विजय के बीच के ज़माने में अपने पिता के साथ मेरे यहाँ आईं। चुनाँचे मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फ़तवा पूछा। मैंने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! मेरी माँ मेरे यहाँ आई है और उसके अंदर दिलचस्पी दिख रही है। ऐसे में क्या मैं उसके रिश्ते का हक़ अदा करूँ? आपने उत्तर दिया : "हाँ, उसके रिश्ते का हक़ अदा करो।"[सहीह बुख़ारी : 3183, सहीह मुस्लिम : 50]इसी तरह पति को अपनी यहूदी एवं ईसाई पत्नी के साथ अच्छा व्यवहार करने और उसे उसके धर्म के कारण तंग न करने, लज्जित न करने एवं हेय दृष्टि से न देखने का आदेश दिया है।

इस्लाम की आसानी एवं सहिष्णुता का एक उदाहरण यह है कि उसने मुसलमानों को ऐसे ग़ैर-मुस्लिमों के साथ अच्छे से सहयोग करने का आदेश दिया है, जो धर्म के कारण उनसे युद्ध नहीं करते। इस्लाम ने ऐसे लोगों के साथ न्याय को वाजिब किया है और अच्छा व्यवहार करने का आह्वान किया है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :{ لَا يَنْهَاكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ لَمْ يُقَاتِلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ أَنْ تَبَرُّوهُمْ وَتُقْسِطُوا إِلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ)8} "अल्लाह तुम्हें इससे नहीं रोकता कि तुम उन लोगों से अच्छा व्यवहार करो और उनके साथ न्याय करो, जिन्होंने तुमसे धर्म के विषय में युद्ध नहीं किया और न तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला। निश्चय अल्लाह न्याय करने वालों से प्रेम करता है।"[सूरा अल-मुमतहना : 8]

दरूद व सलाम हो हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर।

एकीकृत संख्या : 3180

प्रश्न संख्या : 32

इस्लाम में इन्सान के क्या अधिकार हैं?

उत्तर :

महत्व / 1

इस्लाम ने सृष्टिकर्ता एवं सृष्टि दोनों के अधिकारों की रक्षा की है। मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अनहु से रिवायत है, उन्होंने कहा :मैं सवारी पर अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे बैठा हुआ था। मेरे और आपके बीच कजावे की लकड़ी के अलावा और कोई चीज़ नहीं थी। इसी बीच आपने कहा : "ऐ मुआज़ बिन जबल!" मैंने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! मैं उपस्थित हूँ तथा आपके अनुसरण एवं आज्ञापालन के लिए तैयार हूँ। फिर आप कुछ देर चले और उसके बाद फ़रमाया : "ऐ मुआज़ बिन जबल!" मैंने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! मैं उपस्थित हूँ तथा आपका अनुसरण एवं आज्ञापालन के लिए तैयार हूँ। फिर कुछ देर चले और उसके बाद फ़रमाया : "ऐ मुआज़ बिन जबल!" मैंने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! मैं उपस्थित हूँ तथा आपका अनुसरण एवं आज्ञापालन के लिए तैयार हूँ। अब आपने कहा : "क्या तुम जानते हो कि बंदों पर अल्लाह का क्या अधिकार है?" उनका कहना है कि मैंने कहा : अल्लाह और उसके रसूल को बेहतर पता है। आपने कहा : "बंदों पर अल्लाह का अधिकार यह है कि बंदे उसकी इबादत करें और किसी को उसका साझी न बनाएँ।" फिर आप कुछ देर चले और उसके बाद फ़रमाया : "ऐ मुआज़ बिन जबल!" मैंने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! मैं उपस्थित हूँ तथा आपका अनुसरण एवं आज्ञापालन के लिए तैयार हूँ। आपने कहा : "क्या तुम जानते हो कि बंदे जब इतना कर लें तो अल्लाह पर बंदों का क्या अधिकार है?" उनका कहना है कि मैंने कहा : अल्लाह और उसके रसूल को बेहतर मालूम है। आपने कहा : "अल्लाह पर बंदों का अधिकार यह है कि अल्लाह बंदों को अज़ाब (यातना) न दे।"[सहीह बुख़ारी, हदीस संख्या : 6267, सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 48]

इस्लाम बंदे के दीन और दुनिया दोनों की रक्षा के लिए आया है। इस्लाम के एक व्यापक धर्म होने का एक उदाहरण यह है कि उसने मानव निर्मित संविधानों की तरह जीवन के कुछ क्षेत्रों में इन्सान के अधिकार को नज़र अंदाज़ नहीं किया। इनमें से कुछ क्षेत्र इस प्रकार हैं :

1- दीन के मामले में इन्सान का अधिकार : इस्लाम ने लोगों को सच्चे दीन की ओर बुलाया है और अन्य दीनों की असत्यता को स्पष्ट किया है। लेकिन, किसी को इस्लाम को मानने पर मजबूर नहीं किया है। उसने कहा है कि दीन इन्सान की सबसे अहम ज़रूरत है, इसलिए उसकी सुरक्षा को अन्य सारी चीज़ों पर प्राथमिकता दी जाएगी। उसने मुस्लिम देशों में रहने वाले ग़ैर-मुस्लिमों को भी इस्लाम की बताई हुई शर्तों के मुताबिक़ अपने दीन पर अमल करने का अधिकार दिया है।

2- जीने का अधिकार : इसलाम ने सभी सम्मानित जानों को मारने से रोका है और इस तरह उनको सुरक्षा प्रदान की है। युद्ध की हालत में भी इस्लाम ने युद्ध में शरीक न होने वाले बच्चों, औरतों और बूढ़ों को मारने से मना किया है।

3- नस्ल आगे बढ़ाने का अधिकार : इस्लाम ने इन्सान के वंश को आगे बढ़ाने के अधिकार की रक्षा की है और इससे रोके जाने या इस अधिकार को प्राप्त करने के मार्ग में किसी प्रकार का रोड़ा अटकाने को हराम क़रार दिया है।

4- इन्सान के सामाजिक अधिकार : इस्लाम ने माता-पिता एवं रिश्तेदारों के इस अधिकार की रक्षा की है कि उनके साथ अच्छा व्यवहार किया जाए, ज़रूरत के समय उनपर खर्च किया जाए और उनसे रिश्ता जोड़कर रखा जाए। पड़ोसियों के इस अधिकार की रक्षा की है कि उनके साथ अच्छा व्यवहार किया जाए और उनको किसी प्रकार का कष्ट देने से बचा जाए। रास्ते के इस अधिकार की रक्षा की है कि रास्ता भटके हुए आदमी को रास्ता बताया जाए, नज़र नीची रखी जाए, कष्टदायक वस्तु को हटाया जाए और किसी को परेशान न किया जाए आदि। इस्लाम ने आम लोगों को भी बहुत-से अधिकार दिए हैं और उनकी रक्षा की है।

5- इन्सान के आर्थिक अधिकार : इस्लाम ने व्यक्ति के संपत्ति रखने के अधिकार की रक्षा की और सूद को हराम क़रार दिया। उसने ज़रूरत पड़ने पर क़र्ज़ लेने को जायज़ बताया और क़र्ज़ अदा करने में सुस्ती करने से सावधान किया। उसने ज़कात द्वारा ज़रूरतमंदों की मदद करने को वाजिब क़रार दिया और सदक़ा द्वारा उनकी सहायता करने की प्रेरणा दी। अगर किसी को कोई अस्थायी आवश्यकता हो, तो उस आवश्यकता के ख़त्म होने तक उसके लिए लोगों से माँगने को भी हलाल कर दिया। उसने राज्य के सार्वजनिक स्रोतों एवं संसाधनों को भी व्यवस्थित किया।

6- इन्सान के स्वास्थ्य से संबंधित अधिकार : इस्लाम में स्वास्थ्य से संबंधित बहुत-से विधि-विधान मौजूद हैं। इन सब का लक्ष्य व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य को बनाए रखना है।मसलन उन चीज़ों की मनाही, जो इन्सान के व्यक्तिगत स्वास्थ्य या उसके आस-पास के समाज के स्वास्थ्य को हानि पहुँचाती हैं। जैसे कि इस्लाम ने नशीली दवाओं और नशीले पदार्थों का सेवन प्रतिबंधित किया है।व्यभिचार एवं समलैंगिकता से रोका गया है, क्योंकि इसके कारण कई बीमारियाँ उत्पन्न होती और एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलती हैं।इसी तरह जब किसी शहर में प्लेग (ताऊन) फैल जाए, तो वहाँ से निकलकर कहीं और जाने या किसी और शहर से वहाँ प्रवेश करने से मना किया गया है, क्योंकि वहाँ जाना बीमारी या मौत का कारण बन सकता है और वहाँ से निकलकर कहीं और जाना स्वस्थ लोगों में बीमारी फैलाने का कारण बन सकता है।

7- महिलाओं के अधिकार : इस्लाम ने औरत के अधिकारों की रक्षा करते हुए सामर्थ्य के अनुसार उसकी देख-भाल करने, उसके साथ अच्छा व्यवहार करने और उसे खुश रखने को अनिवार्य किया है। एक बहन, पत्नी तथा बेटी की हैसियत से उसके अधिकारों की रक्षा करते हुए उसकी देखभाल तथा रक्षा करने, उसकी राहत के लिए काम करने तथा उसके साथ सफ़र करने का आदेश दिया है, क्योंकि आम तौर पर सफ़र में कष्ट का सामना करना पड़ता है।औरत के अभिभावक पर उसका खर्च उठाना अनिवार्य किया है, क्योंकि औरत को घर में रहने का आदेश है। इस्लाम ने औरत को अपने धन तथा विरासत आदि से प्राप्त माल को खर्च करने का अधिकार दिया है।उसे पति चुनने, बच्चे को दूध पिलाने तथा अपने बच्चों का देखभाल करने का भी अधिकार है।इस्लाम तथा अन्य में अंतर यह है कि एक मुसलमान इन अधिकारों को इस विश्वास के साथ अदा करता है कि इसके बदले में उसे अल्लाह की ओर से प्रतिफल मिलने वाला है। किसी क़ानून आदि के भय से नहीं।इस्लाम से पहले आम तौर पर लोगों और विशेष रूप से औरतों की हालत कैसी थी तथा समकालीन व्यवस्थाओं में उनकी हालत कैसी है, इसके तुलनात्मक अध्ययन से इस्लाम की विशेषताएँ अच्छी तरह स्पष्ट हो जाती हैं।

8- इस्लाम ने जिन्नों तथा जानवरों के अधिकारों की भी सुरक्षा की है, जिसका विवरण फ़िक़्ह की किताबों में देखा जा सकता है। अतः जब इस्लाम ने जिन्नों तथा जानवरों के भी अधिकारों की रक्षा की है, तो भला इन्सान के अधिकारों की रक्षा में कोई कोताही कैसे कर सकता है, जिसे अल्लाह ने सम्मान प्रदान किया है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :{ وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ وَحَمَلْنَاهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنَاهُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَى كَثِيرٍ مِمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيلًا }(70) "निश्चय ही हमने आदम की संतान को सम्मान प्रदान किया, और उन्हें थल और जल में सवार किया, और उन्हें अच्छी-पाक चीज़ों की रोज़ी दी, तथा हमने अपने पैदा किए हुए बहुत-से प्राणियों पर उन्हें श्रेष्ठता प्रदान की।"[सूरा अल-इसरा : 70]इस तरह इस्लाम ने पूरी मानव जाति को

सम्मान प्रदान किया है। विश्वासी को भी और अविश्वासी को भी। अरब को भी और ग़ैर-अरब को भी। काले को भी और गोरे को भी।

एकीकृत संख्या : 3120

प्रश्न संख्या : 35

क्या इस्लाम तलवार की नोक पर फैला है? अगर हाँ, तो उसे शांति का आह्वान करने वाला धर्म कैसे कहा जा सकता है?

उत्तर :

महत्व / 1

प्रश्न : क्या इस्लाम तलवार के बल पर फैला है?

उत्तर : सच्ची बात यह है कि इस्लाम आह्वान के माध्यम से फैला है और इस्लामी आह्वान के सामने खड़े होने वाले या उससे युद्ध करने वाले से युद्ध द्वारा इस मुहिम को प्रबलता प्रदान की गई है। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का में तेरह साल तक लोगों को इस्लाम की ओर बुलाने का काम किया और युद्ध का आदेश प्राप्त होने से पहले ही मदीना विजय हो गया।अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथी और मुसलमान दुनिया के कोने-कोने में फैल गए और लोगों को इस्लाम की ओर बुलाने का काम किया। ऐसे में जिसने रोड़ा अटकाया और युद्ध किया, मुसलमानों को उससे युद्ध करना पड़ा। इस्लाम ने किसी को मुसलमान होने पर मजबूर नहीं किया। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :{لا إِكْرَاهَ فِي الدِّينِ}، "धर्म के मामले में कोई ज़ोर-जबरदस्ती नहीं है।"जो मुसलमान न होना चाहे, इस्लाम ने उसके लिए जिज़्या (विशेष कर) का प्रावधान रखा है। सच पूछिए तो ऐसे लोगों की सुरक्षा तथा संरक्षण के मुक़ाबले में उनसे जिज़्या (विशेष कर) के रूप में जो धन लिया जाता है, वह बहुत ही कम है।इस्लाम ने हमेशा ज़िम्मियों को सुरक्षा प्रादन की है और उसकी छाया तले यहूदी तथा ईसाई धर्मों के लोग जीवन बिताते रहे हैं। जबकि वे पहले एक-दूसरे से लड़ते और मार-काट करते रहते थे। इस्लाम ने सब को अमन व शांति का वातावरण प्रदान किया।यह बंदों पर अल्लाह की दया एवं कृपा है कि उसने जिहाद का प्रावधान रखा, ताकि आह्वान का काम हो सके और इस्लाम का राज्य स्थापित हो सके, जिससे हर प्रकार की खुशियाँ प्राप्त होती हैं और दुनिया एवं आख़िरत में मुक्ति मिल सकती है।

एकीकृत संख्या : 20

प्रश्न संख्या : 37

आतंकवाद के बारे में इस्लाम का क्या दृष्टिकोण है?

उत्तर :

महत्व / 1

प्रश्न : आतंवाद के बारे में इस्लाम का क्या दृष्टिकोण है?

उत्तर : आतंकवाद देशों, समूहों या व्यक्तियों द्वारा भौतिक या नैतिक रूप से किसी व्यक्ति को उसके धर्म, जान, मान-सम्मान, विवेक या धन के संबंध में नाहक़ उत्पीड़न का शिकार बनाने का नाम है। यह धरती में एक प्रकार का उपद्रव मचाना है।

उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :﴿وَلَا تَبۡغِ ٱلۡفَسَادَ فِى ٱلۡأَرۡضِۖ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يُحِبُّ ٱلۡمُفۡسِدِينَ﴾ "तथा धरती में बिगाड़ की तलाश मत कर। निःसंदेह अल्लाह बिगाड़ पैदा करने वालों से प्रेम नहीं करता।"[सूरा अल-क़सस : 77]

जो लोग धरती में बिगाड़ फैलाते हैं, उनकी बुराई के सिलसिले को बंद करने और लोगों के धन, रक्त और इज़्ज़त-आबरू को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से अल्लाह ने उनके लिए बड़ी सख़्त सज़ाएँ निर्धारित की हैं।﴿إِنَّمَا جَزَاءُ الَّذِينَ يُحَارِبُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَنْ يُقَتَّلُوا أَوْ يُصَلَّبُوا أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ مِنْ خِلَافٍ أَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْأَرْضِ ذَلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ﴾(33) "जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से युद्ध करते हैं तथा धरती में उपद्रव करने का प्रयास करते हैं, उनका दंड यही है कि उन्हें बुरी तरह क़त्ल कर दिया जाए, या उन्हें बुरी तरह सूली दी जाए, या उनके हाथ-पाँव विपरीत

दिशाओं से बुरी तरह काट दिए जाएँ, या उन्हें (उस) देश से निकाल दिया जाए। यह उनके लिए दुनिया में अपमान है तथा आख़िरत में उनके लिए बहुत बड़ी यातना है।"[सूरा अल-माइदा : 33]

यहाँ यह बता देना उचित होगा कि काफ़िर लोग हमेशा इस्लाम से लड़ते रहे हैं और लोगों को उससे दूर रखने के लिए उसके बारे में दुष्प्रचार करते रहे हैं :﴿يُرِيدُونَ أَن يُطْفِـُٔوا۟ نُورَ ٱللَّهِ بِأَفْوَٰهِهِمْ وَيَأْبَى ٱللَّهُ إِلَّآ أَن يُتِمَّ نُورَهُۥ وَلَوْ كَرِهَ ٱلْكَٰفِرُونَ﴾ "वे चाहते हैं कि अल्लाह के प्रकाश को अपने मुँह से से बुझा दें, हालाँकि अल्लाह अपने प्रकाश को पूरा किए बिना नहीं छोड़ेगा, भले ही काफिरों को बुरा लगे।"[सूरा अल-तौबा : 32]इसी दुष्प्रचार का एक भाग मुसलमानों को आतंकवादी तथा वहशी कहना है। वह यह भूल जाते हैं कि आतंकवाद, वहशीपन, लोगों की हत्या, नाहक़ लोगों पर अधिकार जमाना और इस प्रकार की अन्य बुरी बातें अल्लाह पर विश्वास न रखने वालों की विशेषताएँ हैं। प्राचीन तथा आधुनिक इतिहास में इसकी बहुत-सी मिसालें देखी जा सकती हैं।

अगर इस्लाम का दावा करने वाले कुछ लोग अनजाने में या बुरे इरादे से इस प्रकार का काम करते भी हैं, तो इसे इस्लाम से जोड़ा नहीं जा सकता। क्योंकि इस्लाम इस तरह की बातों से मना करता तथा रोकता है।एकीकृत संख्या : 3040

प्रश्न संख्या : 42

सारे धर्म इस बात का दावा करते हैं कि वे अल्लाह का धर्म हैं। ऐसे में केवल इस्लाम ही को क्यों माना जाए?

उत्तर :

महत्व /1

जिन मानदंडों के आधार पर सच्चे धर्म की पहचान की जा सकती है, वह इस प्रकार हैं :

1- यह कहना कि सारे धर्म अल्लाह का धर्म होने का दावा करते हैं, ग़लत है। कुछ धर्म, जैसे बौद्ध धर्म एवं हिंदू धर्म सांसारिक धर्म हैं। यानी इन धर्मों की स्थापना करने वाले इस बात का दावा नहीं करते कि वह इन्हें अल्लाह के यहाँ से लाए हैं। ये धर्म कुछ इन्सानों की इस आधार पर सम्मान तथा इबादत का आह्वान करते हैं कि वे पूज्य हैं। या फिर ये कुछ मौजूद मूर्त चीज़ों, जैसे सूरज, चाँद और तारों तथा कुछ सृष्टियों, जैसे पेड़, पहाड़, जानवर और नदियों आदि की इबादत का आह्वान करते हैं। इन धर्मों को मूर्ति पूजने वाले धर्म कहा जाता है।

2- सच्चा धर्म वह है, जो अल्लाह की ओर से आया है। उसका विधान अल्लाह ने अपने बंदों के लिए किया है और रसूलों ने उसे लोगों तक पहुँचाया है। पिछले नबियों के लाए हुए धर्म, जैसे यहूदी एवं ईसाई धर्म आकाशीय सही धर्म हैं, लेकिन बाद में उनके साथ छेड़-छाड़ की गई और उनको बदल दिया गया तथा अल्लाह के अंतिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आने के बाद उनका निरस्तीकरण हो गया।जब तक उन धर्मों के साथ छेड़-छाड़ नहीं हुई थी, तब तक उनकी किताबों में यह बात मौजूद थी कि अंतिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आ जाने के बाद उनका अनुसरण करना ज़रूरी होगा। आज भी उनके अंदर कई ऐसी इबारतें मिल जाती हैं, जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आने का सुसमाचार सुनाती हैं और लोगों को आपके अनुसरण का आह्वान करती हैं।यही कारण है कि हम अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समकालीन यहूदियों को पाते हैं कि वे आपके प्रकट होने की प्रतीक्षा कर रहे थे और जब मदीने के बहुदेववादियों से उनका झगड़ा होता, तो वे बहुदेववादियों को इसकी धमकी भी दिया करते थे।, सलमा बिन सलामा बिन वक़्श रज़ियल्लाहु अनहु, जो एक बद्री सहाबी थे, कहते हैं :बनू अब्द अल-अशहल की बस्ती में हमारा एक यहूदी पड़ोसी था। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबी बनाए जाने से कुछ ही दिन पहले एक दिन वह हमारे पास आया और बनू अब्द अल-अशहल की सभा में खड़ा हो गया। उस समय मैं उस सभा में मौजूद लोगों में सबसे कम आयु का था। मैं एक चादर ओढ़कर लेटा हुआ था। उसने मौत के बाद जीवित करके उठाए जाने, क़यामत, हिसाब-किताब, कर्मों के तौले जाने और जन्नत तथा जहन्नम का ज़िक्र किया। उसने यह बातें ऐसे लोगों के सामने कहीं, जो शिर्क में लिप्त थे और बुतों की पूजा करते थे। वह इस बात को नहीं मानते थे कि मौत के बाद भी दोबारा ज़िंदा होकर उठना है। अतः उन्होंने कहा: तेरा बुरा हो, क्या तुझे लगता है कि यह सब होने वाला है? क्या लोग सचमुच मौत के बाद जीवित करके एक ऐसी दुनिया में एकत्र किए जाएँगे, जिसमें जन्नत तथा जहन्नम है और जहाँ उनको उनके कर्मों का बदला दिया जाएगा? उसने उत्तर दिया : अवश्य! मैं उसकी क़सम खाकर कहता हूँ, जिसकी क़सम खाई जाती है, मैं यह चाहता हूँ कि उस आग के बदले में दुनिया के सबसे बड़े तन्नूर (आग की भट्टी) को गर्म करके मुझे उसमें डाल दिया जाए और उसका दरवाज़ा बंद कर दिया जाए और इस तरह कल मुझे उस आग से छुटकारा मिल जाए। यह सुन लोगों ने कहा: तेरा बुरा हो, उसकी निशानी क्या होगी? उसने उत्तर दिया: एक नबी जो इन नगरों की ओर भेजा जाएगा। यह कहते हुए उसने मक्का और यमन की ओर इशारा किया।

लोगों ने कहा: तुम्हारे अनुसार ऐसा कब होगा? सलमा बिन सलामा कहते हैं कि उसने मेरी ओर देखा, जो कि वहाँ मौजूद लोगों में सबसे कम आयु के व्यक्तियों में से एक था और कहा: अगर यह बच्चा सामान्य जीवन जीता है, तो उसे पा लेगा। सलमा बिन सलामा आगे कहते हैं: वह आदमी अभी जीवित ही था कि अल्लाह ने अपने रसूल को भेज दिया और हम आपपर ईमान ले आए, लेकिन उसने द्वेष के कारण ईमान नहीं लाया। जब हमने उससे कहा कि ऐ अमुक तेरा बुरा हो, क्या तुमने ही हमारे सामने इस नबी के बारे में भविष्यवाणी नहीं की थी? उसने उत्तर दिया : हाँ, की तो थी, लेकिन मैं उनपर ईमान नहीं लाता।[इस हदीस को इमाम अहमद ने हसन सनद से नक़ल किया है। देखिए, हदीस संख्या : 15841]लेकिन जब अल्लाह के नबी मुहम्मद आ गए और यहूदियों ने देखा कि वह यहूदी समुदाय से नहीं हैं, तो द्वेष के कारण उनको मानने से मना कर दिया। वरना वे जानते थे कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के सच्चे रसूल हैं।

3- इन्सान पर इस्लाम को मानना इसलिए ज़रूरी है कि इस्लाम अल्लाह का धर्म और सच्चा धर्म है, जबकि शेष धर्मों के साथ ऐसी बात नहीं है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :{ ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الْبَاطِلُ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ}(30) "यह इसलिए है कि अल्लाह ही सत्य है, और यह कि उसके सिवा जिसे वे पुकारते हैं, वह असत्य है, और यह कि अल्लाह ही सर्वोच्च, सबसे महान है।"[सूरा लुक़मान : 30]

4- इस्लाम धर्म, जो कि सच्चा धर्म है, उससे इन्सान को दो लाभ प्राप्त होते हैं। एक का संबंध दुनिया से है और दूसरे का संबंध आख़िरत से है। इस्लाम को मानने के बाद इन्सान को दुनिया में चैन, शांति एवं सुखमय जीवन प्राप्त होता है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :{ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهُ حَيَاةً طَيِّبَةً وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ (97)} "जो भी अच्छा कार्य करे, नर हो अथवा नारी, जबकि वह ईमान वाला हो, तो हम उसे अच्छा जीवन व्यतीत कराएँगे। और निश्चय हम उन्हें उनका बदला उन उत्तम कार्यों के अनुसार प्रदान करेंगे जो वे किया करते थे।"[सूरा अल-नह्ल: 97]उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :{ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُمْ بِذِكْرِ اللَّهِ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ}(28) "वे जो ईमान लाए और उनके दिलों को अल्लाह के ज़िक्र (याद) से संतुष्टि मिलती है। सुन लो! अल्लाह के ज़िक्र (याद) ही से दिलों को संतुष्टि मिलती है।"[सूरा अल-राद : 28] जबकि आख़िरत में शाश्वत सफलता, जहन्नम से मुक्ति एवं अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त होगी। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :{ كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ وَإِنَّمَا تُوَفَّوْنَ أُجُورَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ}(185) "प्रत्येक प्राणी को मौत का स्वाद चखना है और तुम्हें क़ियामत के दिन तुम्हारे कर्मों का भरपूर प्रतिफल दिया जाएगा। (उस दिन) जो व्यक्ति जहन्नम से बचा लिया गया और जन्नत में प्रवेश पा गया, वह वास्तव में सफल हो गया। तथा दुनिया की ज़िंदगी धोखे की पूंजी के सिवा कुछ नहीं है।"[सूरा आल-ए-इमरान : 185]उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :{ قُلْ أَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِنْ ذَلِكُمْ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَأَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَرِضْوَانٌ مِنَ اللَّهِ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ}(15) "(ऐ नबी!) कह दें : क्या मैं तुम्हें उससे बेहतर चीज़ बताऊँ? उन लोगों के लिए जो (अल्लाह से) डरने वाले हैं उनके रब के पास ऐसे बाग़ हैं, जिनके नीचे से नहरें बहती हैं, (वे) उनमें हमेशा रहने वाले हैं और (उनके लिए उसमें) पवित्र पत्नियाँ तथा अल्लाह की प्रसन्नता है और अल्लाह बंदों को ख़ूब देखने वाला है।"[सूरा आल-ए-इमरान : 15]

5- इस्लाम, जो कि सच्चा धर्म है, इन्सान को सत्य तथा असत्य, हिदायत तथा गुमराही और भले तथा बुरे के बीच अंतर करने की एक कसौटी प्रदान करता है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :{ يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ تَتَّقُوا اللَّهَ يَجْعَلْ لَكُمْ فُرْقَانًا وَيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ }(29) "ऐ ईमान वालो! यदि तुम अल्लाह से डरोगे, तो वह तुम्हें (सत्य और असत्य के बीच) अंतर करने की शक्ति प्रदान करेगा तथा तुमसे तुम्हारी बुराइयाँ दूर कर देगा और तुम्हे क्षमा कर देगा। और अल्लाह बहुत बड़े अनुग्रह वाला है।"[सूरा अल-अनफ़ाल : 29]

इसलिए हर इन्सान पर, नर हो कि नारी, इस्लाम में प्रवेश करना अनिवार्य है। क्योंकि उसके अतिरिक्त अन्य धर्म या तो ऐसे आकाशीय धर्म हैं, जिनको बदल दिया गया और उसके बाद इस्लाम द्वारा उनका निरस्तीकरण हो गया या फिर सिरे से असत्य धर्म हैं, जिनके अंदर कोई अच्छाई नहीं है। ऐसे में उनका पालन करना दुनिया और आख़िरत के नुक़सान के सिवा कुछ नहीं है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :{ وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ}(85) "और जो इस्लाम के अलावा कोई और धर्म तलाश करे, तो वह उससे कदापि स्वीकार नहीं किया जाएगा और वह आख़िरत में घाटा उठाने वालों में से होगा।"[सूरा आल-ए-इमरान : 85]दरूद व सलाम हो हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर।

एकीकृत संख्या : 1510

प्रश्न संख्या : 46

स्वतंत्र इच्छा बनाम जबरदस्ती की अवधारणा के बारे में इस्लाम की क्या सोच है?

उत्तर :

महत्व / 1

उत्तर : अल्लाह ने आकाशों एवं धरती की रचना से पहले सारी चीज़ों की तक़दीरें लिख दीं, रसूल भेजे, किताबें उतारीं, लोगों के मन-मस्तिष्क में अच्छाई से प्रेम और बुराई से घृणा डाल दी, लोगों को अच्छे एवं बुरे को जानने के लिए उचित मार्गदर्शन दिया और दोनों के बीच अंतर करने की शक्ति प्रदान की। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :﴿)10(وَهَدَيْنَاهُ النَّجْدَيْنِ﴾ "और हमने उसे दोनों मार्ग दिखा दिए।"[सूरा अल-बलद : 10]तथा उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :﴿ إِنَّا هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا كَفُورًا)3(﴾ "निःसंदेह हमने उसे रास्ता दिखा दिया। अब वह चाहे कृतज्ञ बने और चाहे कृतघ्न। "[सूरा अल-इन्सान : 3]जब फ़िरऔन ने मूसा अलैहिस्सलाम से पूछा कि तुम दोनों का रब कौन है, तो अल्लाह द्वारा दी गई सूचना के अनुसार उन्होंने कहा था : |@| "(मूसा ने) कहा : हमारा रब वह है, जिसने हर चीज़ को उसका आकार और रूप दिया, फिर रास्ता दिखाया।"[सूरा ताहा : 50]हर इन्सान को अल्लाह ने पैदा किया और उसे बता दिया कि क्या उसके हित में है। इस बात को हर इन्सान अपने दिल में महसूस कर सकता है। बल्कि एक जानवर को भी अल्लाह ने बता दिया है कि क्या उसके हित में है, उसकी प्रजाति की रक्षा कैसे हो सकती है और उसकी नस्ल कैसे आगे बढ़ और फल-फूल सकती है?

अल्लाह ने सृष्टि पर हुज्जत (प्रमाण) स्थापित कर दिया है और नेक लोगों के लिए नेकी का काम करना तथा गुनहगारों के लिए गुनाह का काम करना आसान कर दिया। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :﴿)4(وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَاهَا "और रात की क़सम, जब वह उस (सूरज) को ढाँप ले।")5(وَالسَّمَاءِ وَمَا بَنَاهَا और आकाश की तथा उसके निर्माण की क़सम। وَالْأَرْضِ وَمَا طَحَاهَا)6(और धरती की तथा उसे बिछाने की क़सम।)7(وَنَفْسٍ وَمَا سَوَّاهَا और आत्मा की तथा उसके ठीक-ठाक बनाने की क़सम।)8(فَأَلْهَمَهَا فُجُورَهَا وَتَقْوَاهَا फिर उसके दिल में उसकी बुराई और उसकी परहेज़गारी (की समझ) डाल दी। قَدْ أَفْلَحَ مَنْ زَكَّاهَا)9(निश्चय वह सफल हो गया, जिसने उसे पवित्र कर लिया।)10(وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسَّاهَا﴾ तथा निश्चय वह विफल हो गया, जिसने उसे (पापों में) दबा दिया।"[सूरा अल-शम्स : 4-10]

एक सहाबी ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि तक़दीर के मसले में इन्सान का क्या रवैया होना चाहिए? तक़दीर पर भरोसा करके अमल करना छोड़ देना चाहिए या अमल करते रहना चाहिए? उत्तर में आपने क्या कहा, इसके लिए अली रज़ियल्लाहु अनहु से वर्णित इस हदीस को पढ़िए :हम बक़ी अल-ग़रक़द नामी क़ब्रिस्तान में एक जनाज़े में शरीक थे कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे पास आए। आप बैठ गए तो हम भी आपके आस-पास बैठ गए। आपके पास एक लाठी थी। आपने अपना सर झुका लिया और लाठी से ज़मीन को कुरेदने लगे। फिर फ़रमाया : "अल्लाह ने तुममें से हर व्यक्ति का, हर साँस लेने वाले प्राणी का स्थान जन्नत या जहन्नम में लिख रखा है। उसने लिख रखा है कि वह सौभाग्यशाली होगा या दुर्भाग्यशाली।" यह सुन एक व्यक्ति ने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! क्या ऐसा नहीं हो सकता कि हम अपनी लिखी हुई तक़दीर पर भरोसा करके अमल करना छोड़ दें? इसपर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "दरअसल बात यह है कि जो सौभाग्यशाली लोगों में से होगा, वह सौभाग्यशाली लोगों के काम की ओर चल पड़ेगा और जो दुर्भाग्यशाली लोगों में से होगा, वह दुर्भाग्यशाली लोगों के अमल की ओर चल पड़ेगा।" आगे फ़रमाया : "तुम अमल किया करो। हर व्यक्ति के लिए अमल आसान कर दिया जाता है। सौभाग्यशाली लोगों के लिए सौभाग्यशाली लोगों का अमल आसान कर दिया जाता है। जबकि दुर्भाग्यशाली लोगों के लिए दुर्भाग्यशाली लोगों का अमल आसान कर दिया जाता है।" फिर आपने यह आयत पढ़ी : "फिर जिसने (दान) दिया और (अवज्ञा से) बचा। और सबसे अच्छी बात को सत्य माना। तो निश्चय हम उसके लिए भलाई को आसान कर देंगे। लेकिन वह (व्यक्ति) जिसने कंजूसी की और बेपरवाही बरती। और सबसे अच्छी बात को झुठलाया। तो हम उसके लिए कठिनाई (बुराई का मार्ग) आसान कर देंगे।"[सहीह मुस्लिम : 2647]

अल्लाह इस बात से निस्पृह है कि वह किसी को किसी बात पर मजबूर करे। क्योंकि उसका न नेकी के कामों से लाभ होता है और न गुनाह के कामों से नुक़सान। यह और बात है कि उसने अलग-अलग प्रवृत्तियाँ तथा प्रकृति बनाई और अलग-अलग लोगों के लिए अलग-अलग काम करना आसान कर दिया। लेकिन वह इस बात से निस्पृह है कि किसी को मजबूर करे।

दरअसल अल्लाह लोगों को पैदा करने से पहले ही से इस बात को जानता है कि वे पैदा होने के बाद क्या कुछ करने वाले हैं। उसने अपनी इसी जानकारी को लौह-ए-महफ़ूज़ में लिख रखा है। इस दुनिया में जो कुछ भी होता है, अल्लाह के इरादे से होता है।दुनिया में जो भी घटना घटती है, अल्लाह के इरादे से और उसके प्रबंधन के नतीजे में घटती है तथा उसका रचयिता वही है। उसके अंदर उसकी बड़ी हिकमत छुपी हुई होती है। जबकि इन्सान के पास भी अपनी चाहत और अपना इरादा होता है, लेकिन वह अल्लाह के इरादे के अधीन होता है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :{ وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ)29(} "तथा तुम कुछ नहीं चाह सकते, सिवाय इसके कि सर्व संसार का रब अल्लाह चाहे।"[सूरा अल-तकवीर : 29]और बंदे से उन कामों का हिसाब भी लिया जाएगा, जिनको उसने अपनी इच्छा एवं इरादे से किया है।

हर इन्सान उन कामों के बीच, जिनको वह अपने इरादे तथा एख़्तियार से करता है और उन कामों के बीच अंतर कर सकता है, जो उससे न चाहते हुए भी हो जाते हैं। जैसे बीमारी तथा कहीं से गिर जाना आदि। इन्सान जो चाहता है, उसका चयन करता है और जो नहीं चाहता, उससे अपने एख़्तियार से मुँह फेर लेता है।

इस तरह इन्सान अपने इरादे और एख़्तियार (पसंद) से काम करता है और इसी का जवाबदेह क़यामत के दिन उसे होना होगा। इसके विपरीत जो काम उसकी मर्ज़ी और इरादे के बिना होता है और जिसको वह टाल नहीं सकता, जैसे बीमारी तथा किसी कर्तव्य के पालन से विवशता आदि, तो क़यामत के दिन उसके सर पर उसकी जवाबदही नहीं होगी।

एकीकृत संख्या : 1360

महत्व /1

प्रश्न : इस्लाम धर्म की विशिष्टताएँ क्या-क्या हैं? या फिर मैं दूसरे धर्मों की बजाय इस्लाम धर्म का पालन क्यों कर रहा हूँ?

उत्तर : इस्लाम धर्म सैद्धांतिक तथा व्यवहारिक दोनों दृष्टिकोण से बड़ा सुंदर धर्म है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है ﴿وَمَنۡ أَحۡسَنُ دِينٗا مِّمَّنۡ أَسۡلَمَ وَجۡهَهُۥ لِلَّهِ وَهُوَ مُحۡسِنٞ﴾: "तथा उस व्यक्ति से अच्छा धर्म किसका हो सकता है, जिसने अपना शीश अल्लाह के सामने झुका दिया और वह अच्छे कार्य करने वाला (भी) हो?"[सूरा अल-निसा : 125]

- इस्लाम धर्म की एक विशिष्टता यह है कि उसने मानव जाति को बंदों की दासता से निकालकर अल्लाह की दासता के दायरे में लाने का काम किया है। एक मुसलमान अल्लाह के सिवा न किसी की इबादत करता है, न किसी को सजदा करता है, न किसी के आगे झुकता है, न किसी से डरता है और न किसी से आशा रखता है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है ﴿وَإِلَٰهُكُمۡ إِلَٰهٞ وَٰحِدٞۖ لَّآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلرَّحۡمَٰنُ ٱلرَّحِيمُ﴾: "और तुम्हारा पूज्य (मा'बूद) एक ही पूज्य है, उसके अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं, अत्यंत दयावान्, असीम दयालु है।"[सूरा अल-निसा : 163]

- इस्लाम की दूसरी विशिष्टता यह है कि उसने सारे बंदों को समान कहा है। उसकी नज़र में किसी अरब को किसी ग़ैर-अरब पर और किसी गोरे को किसी काले पर कोई प्रधानता प्राप्त नहीं है। उसने पद, धन और शक्ति आदि अज्ञानता (जाहिलीयत) काल के उन मानदंडों को ध्वस्त कर दिया, जिनके आधार पर लोग अभिमान किया करते थे। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِنَّا خَلَقۡنَٰكُم مِّن ذَكَرٖ وَأُنثَىٰ وَجَعَلۡنَٰكُمۡ شُعُوبٗا وَقَبَآئِلَ لِتَعَارَفُوٓاْۚ إِنَّ أَكۡرَمَكُمۡ عِندَ ٱللَّهِ أَتۡقَىٰكُمۡۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٞ﴾: "ऐ मनुष्यो! हमने तुम्हें एक नर और एक मादा से पैदा किया तथा हमने तुम्हें जातियों और क़बीलों में कर दिए, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो। निःसंदेह अल्लाह के निकट तुममें सबसे अधिक सम्मान वाला वह है, जो तुममें सबसे अधिक तक़्वा वाला है। निःसंदेह अल्लाह सब कुछ जानने वाला, पूरी ख़बर रखने वाला है।"[सूरा अल-हुजुरात : 13]एक सहीह हदीस में है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है :"ऐ लोगो, अल्लाह ने तुमसे जाहिलियत का घमंड और अपने बाप-दादाओं पर अभिमान दूर कर दिया है। तो, अब दो प्रकार के लोग हैं : एक परहेज़गार मोमिन और दूसरा दुर्भाग्यशाली गुनहगार। लोग आदम की संतान हैं और आदम मिट्टी से पैदा किए गए थे। लोग अपने (गुज़रे हुए) लोगों पर अभिमान करना बंद कर दें, वरना अल्लाह के यहाँ उस गुबरेले से भी कम महत्व वाले हो जाएँगे, जो अपनी नाक से गंदगी को धकेलता है।"

- इस्लाम धर्म की एक विशिष्टता यह है कि वह अल्लाह पर विश्वास रखने का आदेश देता है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है: ﴿إِنَّمَا ٱلۡمُؤۡمِنُونَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ﴾: "ईमान वाले तो केवल वे लोग हैं, जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए।"[सूरा अल-नूर : 62]एकेश्वरवाद का पालन करने का आदेश दिया है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है : ﴿وَمَآ أُمِرُوٓاْ إِلَّا لِيَعۡبُدُواْ ٱللَّهَ مُخۡلِصِينَ لَهُ ٱلدِّينَ حُنَفَآءَ﴾ "हालाँकि उन्हें केवल यही आदेश दिया गया था कि वे अल्लाह के लिए धर्म को विशुद्ध करते हुए, एकाग्र होकर, उसकी उपासना करें।"[सूरा अल-बय्यिना : 5]नमाज़ तथा ज़कात का आदेश दिया है, पवित्र अल्लाह का कथन है: ﴿وَأَقِيمُواْ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتُواْ ٱلزَّكَوٰةَ﴾ "तथा नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो।"[सूरा अल-नूर : 56]अमानतदारी तथा वचन पूरा करने का आदेश देता है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है : ﴿وَٱلَّذِينَ هُمۡ لِأَمَٰنَٰتِهِمۡ وَعَهۡدِهِمۡ رَٰعُونَ﴾ "और जो अपनी अमानतों तथा अपनी प्रतिज्ञा का ध्यान रखने वाले हैं।"[सूरा अल-मोमिनून : 8]प्रतिज्ञाओं को पूरा करने का आदेश देता है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ أَوۡفُواْ بِٱلۡعُقُودِۚ﴾ "ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! प्रतिज्ञाओं (अनुबंधों) को पूरा करो।"[सूरा अल-माइदा : 1]लोगों के साथ हर एतबार से अच्छा व्यवहार करने और उनका भला करने का आदेश देता है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है: ﴿وَأَحۡسِنُوٓاْۛ إِنَّ ٱللَّهَ يُحِبُّ ٱلۡمُحۡسِنِينَ﴾ "तथा नेकी करो, निःसंदेह अल्लाह नेकी करने वालों से प्रेम करता है।"[सूरा अल-बक़रा : 195]अनिवार्य रूप से जमात के साथ रहने का आदेश देता है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है: ﴿وَٱعۡتَصِمُواْ بِحَبۡلِ ٱللَّهِ جَمِيعٗا وَلَا تَفَرَّقُواْ﴾: "तथा अल्लाह की रस्सी को सब मिलकर मज़बूती से पकड़ लो और विभेद में न पड़ो।"[सूरा आल-ए-इमरान : 103]

दरअसल इस्लाम दया, भलाई, हिकमत, विवेक, प्रकृति और सुधार का धर्म है। यह हर अच्छी चीज़ का आह्वान करता और हर बुरी चीज़ से रोकता है। न्याय का आदेश देता और अत्याचार से रोकता है, खर्च करने का आह्वान करता और कंजूसी से रोकता है, अच्छे आचरण का आह्वान करता और बुरे आचरण से रोकता है।पाकदामनी का आह्वान करता और बेहयाई से रोकता है, सत्य का आह्वान करता और झूठ से रोकता है, रिश्तेदारों के साथ अच्छा व्यवहार करने का आह्वान करता और बुरा व्यवहार करने से रोकता है।नेकी का आह्वान करता और गुनाह से रोकता है, उपकार का आह्वान करता और अत्याचार से रोकता है, मासूम जानों की रक्षा करने का आह्वान करता और उनको नष्ट करने से रोकता है।ग़लत तरीक़े से लोगों का धन खाने से मना करता है, सूद और चोरी से रोकता है, जबकि ख़रीदने-बेचने, सदक़ा करने और अच्छे तरीक़े से धन कमाने के तमाम तरीक़ों का आह्वान करता है।यही कारण है कि इस्लाम ने दीन एवं दुनिया से संबंधित हर अच्छी चीज़ का मार्ग दिखाया है और हर बुरी चीज़ से रोका है। इस्लाम धरती को आबाद करने तथा उसे सुधारने का आदेश देता है और उसमें उपद्रव मचाने से रोकता है। इस तरह इस्लाम सारी श्रेष्ठताओं का धर्म है।

इमाम अहमद आदि ने जाफ़र बिन अबू तालिब का एक कथन नक़ल किया है कि वह कहते हैं :"हम अज्ञानता (जाहिलीयत) वाले लोग थे। हम बुतों की पूजा करते थे, मुरदार खाते थे, बेहयाई के काम करते थे, रिश्ता-नाता काटते थे और पड़ोसी के साथ दुर्व्यवहार करतेथे। हममें से बलवान व्यक्ति निर्बल व्यक्ति को खा जाता था। हममें से हर व्यक्ति की यही हालत थी कि अल्लाह ने हम ही में से एक व्यक्ति को रसूल बनाकर भेजा। हम उसके वंश को जानते थे। उसकी सच्चाई, अमानतदारी और पाकदामनी से अवगत थे। उसने हमें आह्वान किया कि हम एक अल्लाह को मानें, उसी की इबादत करें और उन पत्थरों तथा बुतों की पूजा छोड़ दें, जिनको हमारे बाप-दादा पूजते थे। उसने हमें सच बोलने, अमानत वापस करने, रिश्ते-नातों का ख़्याल रखने, पड़ोसियों के साथ अच्छा व्यवहार करने तथा हराम कामों एवं रक्तपात से दूर रहने का आदेश दिया। उसने हमें बेहयाई के काम करने, झूठ बोलने, यतीम का माल खाने और किसी पाकदामन औरत पर व्यवभिचार का आरोप लगाने से मना किया। उसने हमें आदेश दिया कि हम एक अल्लाह की इबादत करें और किसी को उसका साझी न बनाएँ। उसने हमें नमाज़ पढ़ने, ज़कात देने और रोज़ा रखने का आदेश दिया।"

इस्लाम धर्म की एक विशिष्टता यह है कि यह आख़िरत की ओर बुलाता है, जो दुनिया से उत्तम है। क्योंकि सबसे बड़ी सुरक्षा जन्नत में प्रवेश करने और जहन्नम से बचाए जाने की चिरस्थायी सुरक्षा है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :﴿ وَأُدْخِلَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ تَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ ﴾"और जो लोग ईमान लाए और अच्छे कार्य किए, उन्हें ऐसी जन्नतों में प्रवेश कराया जाएगा, जिनके (महलों और पेड़ों के) नीचे से नहरें बहती हैं। वे अपने रब की अनुमति से उनमें हमेशा रहने वाले होंगे। उसमें उनका अभिवादन 'सलाम' से होगा।"[सूरा इबराहीम : 23]यही कारण है कि इस्लाम धर्म इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण है कि अल्लाह हर एतबार से संपूर्ण एवं परिपूर्ण है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के सच्चे रसूल हैं। क्योंकि इस धर्म के अंदर अनगिनत ख़ूबियाँ हैं, वह एक संपूर्ण एवं संसार तथा संसारवासियों के लिए उचित धर्म है, वह दया एवं न्याय सिखाता है और उसमें दुनिया एवं आख़िरत की सफलता निहित है। अनतः अल्लाह ही सामर्थ्य प्रदान करने वाला है। और अल्लाह हमारे सरदार मुहम्मद पर दरूद व सलाम अवतरित करे तथा उनके परिवार-परिजन और सहाबा पर।

इस्लाम के बारे में प्रचलित प्रश्नों के विश्वकोश से चुने हुए कुछ प्रश्न.....1
(खंड : इस्लाम).....1
इस्लाम का क्या अर्थ है?.....1
क्या इस्लाम वर्गीकरण की अवधारणा की समर्थन करता है?.....2
इस्लाम में संतुलन (एतिदाल अर्थाथ अतिशयोक्ति) की अवधारणा क्या है?.....3
इस्लाम में सहिष्णुता के क्या-क्या रूप हैं?.....5
इस्लाम में इन्सान के क्या अधिकार हैं?.....6
क्या इस्लाम तलवार की नोक पर फैला है? अगर हाँ, तो उसे शांति का आह्वान करने वाला धर्म कैसे कहा जा सकता है?8
आतंकवाद के बारे में इस्लाम का क्या दृष्टिकोण है?.....8
सारे धर्म इस बात का दावा करते हैं कि वे अल्लाह का धर्म हैं। ऐसे में केवल इस्लाम ही को क्यों माना जाए?.....9
स्वतंत्र इच्छा बनाम जबरदस्ती की अवधारणा के बारे में इस्लाम की क्या सोच है?.....10